International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

# दान

**डॉ. सरला जांगिड़**

सहायक प्रोफ़ेसर, Hindusthan College of arts and science

**"दान जगत का प्रकृत धर्म है, मनुज व्यर्थ डरता है,**
**एक रोज तो हमें स्वयं सब-कुछ देना पड़ता है |**
**बचते वही, समय पर जो सर्वस्व दान करते है,**
**ऋतु का ज्ञान नहीं जिनको, वे देकर भी मरते हैं |"**

'रामधारीसिंह दिनकर'

'दान' शब्द संस्कृत और पालि से बना है | 'दान' का शाब्दिक अर्थ है - 'देने की क्रिया' | दान देने की क्रिया अवश्य है, लेकिन उसमें दानी और ग्राह्यता का निहित उद्देश्य, हित, भाव, इच्छा सब कुछ निहित रहता है | दान एकल प्रक्रिया नहीं है, बल्कि ये समायोजित है |

**"अनपेक्षित फलेच्छा में दूसरे के उपयोग को ध्यान रखते हुए निजी हितों में से कुछ का अर्पण कर देना ही दान कहलाता है|"**

'मानस'

'दान' शब्द जब हमारे कान में आता है, तो हमारे मानस पटल पर सिर्फ कुछ देने का भाव दर्शित होता है | दान में देना क्या है, वो अधिकतर दानी की इच्छा और कभी-कभी सामने वाले के अनुसार दिया जाता है | जो मनुष्य सामने वाले की इच्छा के अनुसार देता है, वही उत्तम प्रकृति का होता है | उस मनुष्य में कुछ पाने या खोने का भय नहीं होता है | इस आधार पर दान को कई रूपों में दर्शाया गया है |

**'दान के प्रकार'**

1. कायिक दान: जो व्यक्ति सुवर्ण, रजत आदि का संकल्पपूर्वक दान देता है, वह कायिक दान है |
2. वाचिक दान: अपने निकट किसी भयभीत व्यक्ति के आने पर जो अभय दान दिया जाता है, वह वाचिक दान है | अभयदान का अर्थ है "भय से मुक्ति" या "सुरक्षा की गारंटी" | यह एक ऐसी अवधारणा है जिसमें किसी व्यक्ति या समूह को किसी भी प्रकार के भय, खतरे, या हिंसा से सुरक्षित रखा जाता है |

अभयदान के मुख्य तत्व हैं:

1. सुरक्षा
2. रक्षा
3. भय से मुक्ति
4. गरिमा और सम्मान की रक्षा
5. जीवन और संपत्ति की सुरक्षा

अभयदान का महत्व विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों में पाया जाता है, जैसे कि:

1. हिंदू धर्म में अभयदान को भगवान कृष्ण की एक महत्वपूर्ण शिक्षा माना जाता है |
2. बौद्ध धर्म में अभयदान को भगवान बुद्ध की एक महत्वपूर्ण शिक्षा माना जाता है |
3. इस्लाम धर्म में अभयदान को "अम्न" कहा जाता है, जिसका अर्थ है सुरक्षा और रक्षा |
4. सिख धर्म में अभयदान को "सुरक्षा" कहा जाता है, जिसका अर्थ है भय से मुक्ति और सुरक्षा |
5. अभयदान का महत्व न केवल धार्मिक संदर्भ में है, बल्कि यह एक मानवाधिकार भी है, जो हर व्यक्ति को सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार देता है |

1. मानसिक दान: जप और ध्यान प्रभृति का जो अर्पण किया जाता है उसे मानसिक दान कहते हैं|

2. विद्या दान: जब किसी व्यक्ति को बिना किसी शुल्क के पुस्तकीय, शास्त्र / धार्मिक पुस्तकों का अभ्यास और किसी शस्त्र चलाने के कौशल का ज्ञान दिया जाता है |
3. भू दान: किसी व्यक्ति द्वारा समाज के उत्थान के लिए, धर्म के प्रचार हेतु मंदिर निर्माण के लिए या किसी की सहायता वश भूमि दान की जाती है |
4. अन्न दान: अन्न दान की परम्परा बहुत पुरानी है | राजा-महाराजा, धनी-सांवत अपने पद की गरिमा हेतु अन्न-दान करते, यही परम्परा आज सामान्य लोग अपने शुभ कर्मो की बढोतरी के लिए करते हैं |
5. कन्या दान: कन्यादान का अभिप्राय-अपनी बेटी की शादी में बेटी को दान में देना | यह हिंदू धर्म की एक सदियों पुरानी अहम रस्म है | कन्यादान को 'महादान' के नाम से अभिहीत किया गया | मान्यता यह है, कि अगर शादी की सारी रस्में हो जाएं, लेकिन कन्यादान के बिना शादी अधूरी मानी जाती है | शास्त्रों में बताया गया है कि कन्यादान की रस्म सबसे पहले प्रजापति दक्ष ने की थी | कन्यादान की रस्म हर राज्य के अलग-अलग हिस्सों में अलग- अलग तरीके से निभाई जाती है |
6. गो दान: गो दान का अर्थ है - गाय को हिन्दू धर्म में तीर्थ माना गया है | गाय को विधिवत रूप से संकल्प करके ब्राह्मण को दान किया जाता है | यह दान साधारण दान, पुण्य, रोग, विवाह या किसी तरह की ख़ुशी, प्रायश्चित्त, शुद्धि के लिए किया जाता है |
7. रक्त दान: कोई व्यक्ति अपनी स्वेच्छा से किसी पीड़ित की सहायता के लिए देता है | यह सहायता निश्चित ही किसी के प्राणों की रक्षा के लिए होती है |
8. श्रम-दान: श्रम दान ज्यादातर NCC, NSS और स्वयंसेवी संस्थानों के द्वारा समाज के लिए किया जाता है |
9. दान चाहे रक्त का, अन्न का, भू का या चाहे गो का | सबसे अच्छा और उत्तम दान शिक्षा का है | शिक्षित व्यक्ति ही अपना, अपने परिवार और अपने समाज के लिए बहुत कुछ प्रयास कर सकता है | अन्न दान से मनुष्य कुछ समय ही अपने पेट की अग्नि शांत कर सकता है, फिर बाद में | हमारे धर्मशास्त्रों, पुराणों और गीता में भी श्री कृष्ण ने दान को अलग- अलग रूपों में परिभाषित किया है |

भगवद्गीता में श्री कृष्ण ने तीन तरह के दान का वर्णन किया है:

**सात्विक दान:**

**"दाताव्यमिति यद्दनं दीयतेऽनुपकारिणे |**

**देशे काले च पात्रे च तद्दनं सात्विकं स्मृतम् ||"**

अर्थात: 'जो दान किसी योग्य व्यक्ति को, बिना किसी प्रतिफल की आशा के, उचित समय पर तथा उचित स्थान पर दिया जाता है, वह सत्त्वगुणी कहा गया है |' श्री कृष्ण की इस दान की परिभाषा में 'महर्षि दधीचि' की कहानी आती है | 'महर्षि दधीचि' ने सामने वाले की इच्छा के अनुसार दान दिया और इसके लिए अपने प्राणों का भी मोह नहीं किया | अपने दान के बदले कुछ प्रतिफल की भी इच्छा नहीं की | 'महर्षि दधीचि' का दान सात्विक दान की श्रेणी में आता है | 'महर्षि दधीचि' के पिता का नाम अथर्वा और माता का नाम चित्रि था | उनकी पत्नी का नाम गभस्तिनी था | वे भगवान शिव के उपासक और वेदों के ज्ञाता थे | वे स्वभाव से दयालु और पर-हित कामी थे | उनकी कठोर तपस्या और ज्ञान का उद्देश्य लोक-हित कामना थी | देवराज इंद्र उनकी तपस्या के तेज से भयभीत था | देवराज इंद्र हमेशा अपने पद को लेकर चिंतित रहते | एक बार देवराज इंद्र की सभा में देवगुरु बृहस्पति आए थे | इंद्र ने गुरु बृहस्पति के सम्मान में उठकर खड़े नहीं हुए, जिससे गुरु बृहस्पति नाराज़ हो गए और देवताओं को छोड़कर चले गए | देवताओं को अचानक 'विश्वरूप' नामक ऋषि को अपना गुरु बनाया | विश्वरूप ने यज्ञ के दौरान चुपके से दानवों की भी आहुति दे दी | तभी इंद्र ने क्रोधित होकर विश्वदेव का सिर धड़ से अलग कर दिया | राक्षस त्वष्टा ने क्रोधित होकर इंद्र को मारने के लिए वृत्रासुर को पैदा किया | वृत्रासुर ने इंद्र को हरा कर देवलोक पर अधिकार कर लिया | वृत्रासुर को किसी शस्त्र से नहीं मारा जा सकता है | देवताओं को गुरु वृहस्पति ने सलाह दी कि महर्षि दधीचि की अस्थियों की राख से एक अस्त्र का निर्माण होगा, फिर इंद्र युद्ध में वृत्रासुर परास्त कर सकेंगे | तब देवताओं ने महर्षि दधीचि से उनकी अस्थियों के लिए गुहार की और महर्षि दधीचि ने सहर्ष लोकहित के लिए अपने शरीर को योगाग्नि में जलाकर इंद्र का उद्धार किया |

**राजसिक दान:**

**"यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुन: |**

**दीयते च परिक्लिष्टं तद्दनं राजसं स्मृतम् ||"**

अर्थात: जो दान अनिच्छा से, प्रतिफल की आशा से या पुरस्कार की आशा से दिया जाता है, वह रजोगुणी कहा जाता है | श्री कृष्ण के शब्दों में यह दान अनिच्छा से देकर प्रतिफल की कामना होती है |

1. इस दान के अंतर्गत कर्ण का दान आता है | माता कुंती को ऋषि दुर्वासा से वरदान मिला | जिसके फलस्वरूप वो किसी भी देवता को अपने समक्ष प्रकट कर सकती है | माता कुंती को कर्ण की प्राप्ति सूर्य देव से हुई और जन्म से वह कवच और कुंडल धारण किए हुए था | कर्ण के जीवन का उद्देश्य एक श्रेष्ठ धनुर्धर बनना और अर्जुन को हराना था | कर्ण के गुरु परशुराम ने भी कर्ण को यह वरदान दिया था कि इतिहास में तुम्हारा नाम दानवीर कर्ण के नाम से जाना जाएगा | महाभारत के युद्ध के दौरान जब अर्जुन और कर्ण का सामना होना था | तब इन्द्र भिखारी का वेश बनाकर कर्ण के पास कवच और कुंडल दान में माँगने आए | यहाँ कर्ण को सारी स्थिति का अंदाज़ा था, लेकिन फिर भी उसने यह दान दिया | कर्ण ने अपनी अनिच्छा से कवच और कुंडल देवराज इंद्र को दिए | क्योंकि वह उसका हथियार था, वह अर्जुन को हराना चाहता था | कर्ण रवि-पूजन के बाद वह दान देता था, देवराज इंद्र को यह दान उसी परम्परा को निभने के लिए दिया | कर्ण देवराज इंद्र से प्रतिफल की आशा नहीं की, बल्कि इंद्र ने अपनी ग्लानि वश एकघ्नी नमक अस्त्र दिया, जिसे युद्ध में कर्ण ने घटोत्कच पर उपयोग किया |

2. इस दान के अंतर्गत राजा बलि का भी दान आता हैयहाँ राजा बलि की इच्छा और अनिच्छा नहीं है | एक नियम है - कि यज्ञ के दौरान आने वाले किसी भी याचक को खाली हाथ नहीं भेजना | जब बलि को अपने गुरु से ज्ञात होता है कि लेने वाला जगत के पालनहार विष्णु है, तो वह अभिमान वश भी उस परम्परा से पीछे नहीं हटता है | बाद यह अभिमान समर्पण में बदल जाता है | यह संदर्भ राजा बलि और भगवान विष्णु के बावन अवतार से जुड़ी कथा है | राजा बलि प्रह्लाद का पौत्र, विरोचन का पुत्र था | राजा बलि में पैतृक संस्कारों की वजह से ईश्वरीय भक्ति और कुछ आसुरी प्रभाव भी था | जिसके कारण वह इन्द्रासन चाहता था | बलि की वजह से सभी देवता बहुत दुखी थे | सभी देवता अपनी माता अदिति के पास पहुंचे और राजा बलि की बढ़ती शक्ति के बारे में बताया | इसके बाद अदिति ने पति कश्यप ऋषि के कहने पर एक व्रत किया, जिसके शुभ फल से भगवान विष्णु ने बावन देव के रूप में अवतार लिया | विष्णु जी बावन देव के रूप में राजा बलि के द्वार पर पहुंचे, जहाँ वह यज्ञ कर रहा था और दान में तीन पग धरती मांगी | राजा बलि ने सोचा, कि ये तो छोटा सा काम है | मेरा तो पूरी धरती पर अधिकार है, मैं इसे तीन पग भूमि दान कर देता हूं | राजा बलि बावन देव को तीन पग भूमि दान देने के लिए संकल्प कर रहे थे, उस समय शुक्राचार्य ने उसे रोकने की कोशिश की | दरअसल, शुक्राचार्य जान गए थे कि बावन के रूप में स्वयं भगवान विष्णु हैं | शुक्राचार्य ने बलि को समझाया, कि ये छोटा बच्चा नहीं है, ये स्वयं विष्णु हैं, ये तुम्हें ठगने आए हैं | तुम इन्हें दान मत दो | ये बात सुनकर बलि बोला कि अगर ये भगवान हैं और मेरे द्वार पर दान मांगने आए हैं तो भी मैं इन्हें मना नहीं कर सकता हूं | ऐसा कहकर बलि ने हाथ में जल का कमंडल लिया तो शुक्राचार्य छोटा रूप धारण करके कमंडल की दंडी में जाकर बैठ गए, ताकि कमंडल से पानी ही बाहर न निकले और राजा बलि संकल्प न ले सके | बावन देव शुक्राचार्य की योजना समझ गए | उन्होंने तुरंत ही एक पतली लकड़ी ली और कमंडल की दंडी में डाल दी, जिससे अंदर बैठे शुक्राचार्य की एक आंख फूट गई और वे तुरंत ही कमंडल से बाहर आ गए | इसके बाद राजा बलि ने वामन देव को तीन पग भूमि दान करने का संकल्प ले लिया | राजा के संकल्प लेने के बाद वामन देव ने अपना आकार बड़ा कर एक पग में पृथ्वी और दूसरे पग में स्वर्ग नाप लिया | इसके बाद उन्होंने राजा से कहा कि अब मैं तीसरा पग कहां रखूं? ये सुनकर राजा बलि का अहंकार टूट गया | तब बलि ने कहा कि तीसरा पग आप मेरे सिर पर रख सकते हैं | बलि की दान वीरता देखकर बावन देव प्रसन्न हुए और उसे पाताल लोक का राजा बना दिया | राजा बलि का अहंकार समर्पण में बदल गया |

3. इस दान के अंतर्गत दानवीर भामाशाह का भी दान आता है | इस दान के बदले वे अपने राज्य मेवाड़ को बचाना था | लेकिन उनके दान में निहित उद्देश्य मेवाड़ का लोक हित था | साथ ही यह दान पूर्ण इच्छा, सौद्देश्य और कामना से दिया गया था | इस दान को हम मातृभूमि प्रेम कहेंगे | उनका जन्म राजस्थान के मेवाड़ राज्य में वर्तमान पाली जिले के सादड़ी गांव में 29 अप्रैल 1547 को ओसवाल जैन परिवार में हुआ | उनके पिता का नाम भारमल था, जो रणथम्भौर के किलेदार थे | भामाशाह का निष्ठापूर्ण सहयोग महाराणा प्रताप के जीवन में महत्वपूर्ण और निर्णायक साबित हुआ | मातृ-भूमि की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप का सर्वस्व होम हो जाने के बाद भी उनके लक्ष्य को सर्वोपरि मानते हुए अपनी सम्पूर्ण धन-संपदा अर्पित कर दी | यह सहयोग तब दिया जब महाराणा प्रताप अपना अस्तित्व बनाए रखने के प्रयास में निराश होकर परिवार सहित पहाड़ियों में छिपते भटक रहे थे | मेवाड़ के अस्मिता की रक्षा के लिए दिल्ली गद्दी का प्रलोभन भी ठुकरा दिया| महाराणा प्रताप को दी गई उनकी हरसम्भव सहायता ने मेवाड़ के आत्म सम्मान एवं संघर्ष को नई दिशा दी |

वह बेमिसाल दानवीर एवं त्यागी पुरुष थे | आत्मसम्मान और त्याग की यही भावना उनके स्वदेश, धर्म और संस्कृति की रक्षा करने वाले देश-भक्त के रूप में शिखर पर स्थापित कर देती है | धन अर्पित करने वाले किसी भी दानदाता को दानवीर भामाशाह कहकर उसका स्मरण-वंदन किया जाता है | उनके सम्मान में भारत सरकार ने ३१ दिसम्बर २००० को ३ रुपये का डाक टिकट जारी किया गया |

**तामसिक दान:**

**"आदेशकाले यद्दनमपात्रेभ्यश्च दीयते |**

**असत्कृतमवज्ञातं तत्तमसमुदाहृतम् ||"**

अर्थात: जो दान गलत स्थान तथा गलत समय पर अयोग्य व्यक्तियों को, बिना सम्मान दिखाए या तिरस्कार के साथ दिया जाता है, वह अज्ञानता की प्रकृति का माना जाता है ।बिना श्रद्धा के यज्ञ, दान और तप के रूप में जो कुछ भी सम्पन्न किया जाता है, वह सभी 'असत्' कहा जाता है, इसलिए वह न तो इस जन्म में लाभदायक होता है और न ही अगले जन्म में लाभदायक होता है ।

'दान' मनुष्य की अंतर्निहित तीन तरह की भावना से सम्बंधित होता है:

1. बिना मांगे ही दान कर दिया जाए ।
2. मांगे जाने पर खुशी-खुशी दान कर दिया जाए ।
3. मांगे जाने पर अनिच्छा से दान दिया जाए या बाद में पछताया जाए, "मैंने इतना क्यों दिया? मैं कम दान देकर भी काम चला सकता था।"

**"प्रगटा चारि पद धर्म के कली महुं एक प्रधान, जेना केन बिधि दीन्हें दान करै कल्याण |"**

'रामायण'

"'दानमेकं कलौ युगे' अर्थात कलियुग में दान देना ही शुद्धि का साधन है । कलियुग में सबसे महत्वपूर्ण है - किसी भी तरह से किसी भी वस्तु का दान देना ।" यह भौतिक वस्तुओं के प्रति देने वाले की आसक्ति को कम करता है | यह पर-सेवा और पर-उपकार की भावना को विकसित कर संतोष और दूसरों के प्रति करुणा की भावना बढ़ावा देता है । अधिकांश धार्मिक परंपराएँ अपनी कमाई का दसवां हिस्सा दान में देने का पालन करती हैं ।

**"न्यायोपार्जिता वित्तस्य दशमन्शेन धीमतः, कर्त्तव्यो विनियोगश्च ईश्वरप्रीत्यर्थमेव च |"**

'स्कंध पुराण'

"अपने द्वारा उचित साधनों से अर्जित धन में से दसवाँ भाग निकालो और कर्तव्य के रूप में उसे दान में दे दो । अपना दान भगवान की प्रसन्नता के लिए समर्पित करो ।" दान वह नहीं हैं, जो होटल में खाना खाकर वहां पर काम करने वाले को आप थोडा पैसा देवें, राह चलते भिखारी को आप कुछ छुट्टे पैसे पकड़ा देवें, मंदिर / मस्जिद के बाहर बैठने वालों को कुछ खाना दिया या फिर आपके किसी विशेष त्यौहार पर आपके यहाँ काम करने वाले को कोई उपहार देवें | ये दान नहीं, ये करुणामयी हदय से झलकता हुआ भाव है, जिसमें प्राणी मात्र को यह संतोष रहता है कि उसने किसी ओर के लिए दान में मनुष्य निर्भाव रहते हुए अपना सर्वस्व अर्पण कर देवे और प्रतिफल की आशा न रखे |

'दान' शब्द को इस परिभाषा के रूप में परिभाषित कर सकते हैं:

**"प्राणी के आत्मसम्मान के संरक्षण में थोड़ा-सा भार वहन करना ही दान है |"**

'मानस'

**संदर्भ सूची:**

1. https://panchjanya.com/2024/05/03/332258/bharat/rajasthan/danveer-bhamashah-know-about-him/
2. https://realisticthinker.com/meaning-of-depressed/
3. https://www.holy-bhagavad-gita.org/chapter/17/verse/26-27
4. भगवद्गीता: अध्याय 17, श्लोक 20
5. भगवद्गीता: अध्याय 17, श्लोक 21
6. भगवद्गीता: अध्याय 17, श्लोक 22